संक्षिप्तिका

जनपद औरैया के नगर : एक भौगोलिक अध्ययन

पर्यवेक्षक **शोधछात्रा**

डॉ0 (कृष्ण कुमार खरे) **(अपर्णा त्रिपाठी)**

औरैया जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर मण्डल में उत्तर–पश्चिम दिशा में अवस्थित है। इसका अक्षॉशीय विस्तार 26^0 21′ उत्तरी अक्षॉश से 26^0 55′ उत्तरी अक्षॉश तक तथा 79^0 12′ पूर्वी देशान्तर से 79^0 45′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस जनपद की पूर्व से पश्चिम लम्बाई 65 कि0मी0 तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 47 कि0मी0 है। अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 2045 वर्ग कि0मी0 हैं। समुद्र तल से अध्ययन क्षेत्र की औसत ऊँचाई 459 मीटर हैं। उत्तर प्रदेश राज्य के दक्षिणी–पश्चिमी भाग में स्थित औरैया जनपद के दक्षिण दिशा मे जालौन जनपद, उत्तर दिशा में कन्नौज जनपद, पूर्व में कानपुर जनपद तथा पश्चिम में इटावा जनपद स्थित हैं।

सर्वप्रथम 17 सितम्बर 1997 को औरैया जनपद अपने अस्तित्व में आया। इससे पूर्व यह इटावा जनपद का भाग था। सामान्यतः जनपद का आकार आयाताकार है। वर्तमान औरैया जनपद दो तहसीलों विधूना व औरैया को मिलाकर बनाया गया है। इसके अन्तर्गत 7 विकासखण्ड क्रमशः ऐरवा कटरा, अछल्दा, विधूना, सहार, भाग्य नगर, अजीतमल तथा औरैया हैं।

जनपद में नदियों का अपवाह उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की ओर है। वर्तमान औरैया जनपद के अन्तर्गत दो तहसीलें विधूना व औरैया व सात विकासखण्ड क्रमशः, एरवाकटरा, विधूना, अछल्दा, सहार, भाग्य नगर, औरैया,

तथा अजीतमल है। विधूना तहसील क्षेत्रफल में सबसे बड़ी है इसका क्षेत्रफल 1111.86 वर्ग कि0मी0 व तहसील औरैया का क्षेत्रफल 924.13 वर्ग कि0मी0 है। इस जनपद में 841 राजस्व ग्राम है, जिसमें 776 अधिवासित ग्राम व 65 अनाधिवासित ग्राम है। यहॉ सिर्फ एक नगरपालिका (औरैया) व छः नगर क्षेत्र है। इस जनपद में 75 न्याय पंचायत व 425 ग्राम पंचायत समाहित हैं।

अध्ययन क्षेत्र की 90 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण जनसंख्या कृषि कार्यो से अपना जीवन निर्वाह करती है। कृषि कार्य सम्पूर्ण वर्ष भर नही चलता कृषक का पर्याप्त समय व्यर्थ में चला जाता है। अतः कृषक को बेकारी की समस्या से बचाने के लिए कृषि आधारित उद्योगों का विकास करके उसके जीवन स्तर को सुधारा जा सकता है। वस्तुतः हमारी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। ग्रामीण विकास के बिना राष्ट्रीय विकास की कल्पना करना दिवास्वप्न के समान है। ग्रामीण उत्थान राष्ट्रीय विकास का मूल आधार है अतः ग्रामीणों के जीवन को सुधारने के लिए कृषि तथा उद्योगों का साथ–साथ विकास करना वर्तमान समय की मुख्य आवश्यकता है।

जनपद औरैया में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 205491 हेक्टेयर है जिसमें से 5.83 प्रतिशत भाग पर वन, चरागाह, उद्यान, 11.07 प्रतिशत भाग पर बंजर एवं परती भूमि, 03.53 प्रतिशत भाग पर ऊसर तथा 9.60 प्रतिशत भाग अन्य उपयोग के अन्तर्गत आने वाली भूमि है। 69.96 प्रतिशत भाग शुद्ध बोया गया है। विकासखण्ड एरवा कटरा में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 23295 हेक्टेयर है। जिसमें 71.96 प्रतिशत शुद्ध बोया गया है। 7.60 प्रतिशत भूमि अन्य उपयोग के अन्तर्गत सुरक्षित है। 2.11 प्रतिशत भाग पर ऊसर, 12.83 प्रतिशत बंजर एवं परती भूमि तथा 05.50 प्रतिशत वन, चारागाह, उद्यान है। अछल्दा विकासखण्ड में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 28740 हेक्टेयर है जिसमें 72.33 प्रतिशत शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल है 04.43 प्रतिशत भाग

पर वन, 10.42 प्रतिशत भूमि बंजर एवं परती है। 03.03 प्रतिशत भूमि पर ऊसर है।

औरैया जनपद में सकल बोया गया क्षेत्रफल 233230 हेक्टेयर है जिसमें रबी की कृषि 55.73 प्रतिशत हेक्टेयर पर, खरीफ की कृषि 43.27 प्रतिशत हेक्टेयर पर तथा जायद की कृषि 1 प्रतिशत भाग पर की जाती है। विकासखण्डवार अध्ययन करने से हम पाते है कि विकासखण्ड औरैया में सकल बोया गया क्षेत्रफल सर्वाधिक 38778 हेक्टेयर है जिसमें 56.25 प्रतिशत हेक्टेयर रबी, 43.60 प्रतिशत खरीफ तथा 00.15 प्रतिशत हेक्टेयर में जायद की कृषि की जाती है। विकासखण्ड विधूना में सकल बोया गया क्षेत्रल 38487 हेक्टेयर जिसमें 54.82 प्रतिशत हेक्टेयर भूमि पर रबी की कृषि होती है। 43.67 प्रतिशत हेक्टेयर भूमि पर खरीफ की खेती की जाती है। मात्र 1. 51 प्रतिशत हेक्टेयर भूमि पर जायद की कृषि होती है। इसका प्रमुख कारण ग्रीष्मकाल में सिंचाई के साधनों का अभाव का होना है। विकासखण्ड सहार में सकल बोया गया क्षेत्रफल 36519 हेक्टेयर है। जिसमे सर्वाधिक भूमि पर (54.42 प्रतिशत) रबी की कृषि की जाती है। 43.95 प्रतिशत भूमि पर खरीफ की फसल उगाई जाती है।

जनपद औरैया में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 222820 हेक्टेयर है जिसमें से 83.23 प्रतिशत क्षेत्रफल (185460 हेक्टेयर) धान्य फसलों का है। तत्पश्चात् 8.11 प्रतिशत क्षेत्रफल (18065 हेक्टेयर) में दलहनी फसलें उत्पन्न की जाती है। तिलहनी फसलों के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल का 7.20 प्रतिशत (16040 हेक्टेयर) भूमि है। अन्य फसलों का उत्पादन 1.46 प्रतिशत (3255 हेक्टेयर) क्षेत्रफल पर किया जाता है।

विकासखण्ड के क्रम से देखा जाये तो धान्य फसलों के अन्तर्गत

सर्वाधिक क्षेत्रफल 33660 हेक्टेयर (91.45 प्रतिशत) विधूना विकासखण्ड में तथा सबसे कम औरैया विकासखण्ड में 69.15 प्रतिशत है। दलहनी फसलों का सर्वाधिक क्षेत्रफल औरैया विकासखण्ड में 6327 हेक्टेयर (17.34 प्रतिशत) है तथा सबसे कम विधूना विकासखण्ड में 957 हेक्टेयर (2.60 प्रतिशत) है। तिलहनी फसलों के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल 4815 हेक्टेयर (13.19 प्रतिशत) औरैया विकासखण्ड में तथा सबसे कम 1193 हेक्टेयर (4.39 प्रतिशत) ऐरवाकटरा विकासखण्ड में है। अन्य फसलों का सर्वाधिक क्षेत्रफल 676 हेक्टेयर (2.80 प्रतिशत) अजीतमल विकासखण्ड में तथा सबसे न्यून औरैया विकासखण्ड में 117 हेक्टेयर (.32 प्रतिशत) है।

जनपद में प्रति लाख जनसंख्या पर 145.30 वर्ग कि0मी0 तथा प्रति 1000 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल पर सड़क मार्ग 626.50 किमी0 है। प्रति लाख जनसंख्या पर सर्वाधिक लम्बे सड़क मार्ग (155.00 कि0मी0) अजीतमल विकासखण्ड में तथा सबसे कम लम्बी सड़क मार्ग सहार विकासखण्ड में (96.00 कि0मी0) है। प्रति लाख जनसंख्या पर 125 कि0मी0 से कम लम्बे सड़क मार्ग अछल्दा, सहार, भाग्य नगर, औरैया विकासखण्डों में तथा 125 से 150 कि0मी0 लम्बे सड़क मार्ग ऐरवा कटरा विकासखण्डों में व 150 कि0मी0 से अधिक लम्बे सड़क मार्ग विधूना व अजीतमल विकासखण्डों में है।

1000 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल पर सर्वाधिक लम्बे सड़क मार्ग अजीतमल विकासखण्ड में 931.80 वर्ग कि0मी0 तथा सबसे कम लम्बे सड़क मार्ग सहार विकासखण्ड में 508.90 वर्ग कि0मी0 है। 600 वर्ग कि0मी0 से कम लम्बे सड़क मार्ग पर 1000 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल पर अछल्दा, सहार व औरैया, विकासखण्डों में 600–900 वर्ग कि0मी0 लम्बे सड़क मार्ग ऐरवा कटरा, विधूना व भाग्य नगर विकासखण्डों में एवं 900 वर्ग कि0मी0 से अधिक लम्बे सड़क मार्ग अजीतमल विकासखण्ड में पाये जाते है।

औरैया जनपद का कुल साक्षरता प्रतिशत 70.50 है। जिसमें ग्रामीण साक्षरता प्रतिशत 68.52 व नगरीय साक्षरता प्रतिशत 81.91 है। जनपद में स्त्रियों की तुलना में पुरूषों का साक्षरता प्रतिशत अधिक है। स्त्रियों में साक्षरता प्रतिशत 59.13 व पुरूषों का साक्षरता प्रतिशत 80.14 है। ऐरवा कटरा, अछल्दा विकासखण्डों में पुरूषों का साक्षरता प्रतिशत 78 से कम, विधूना, सहार, औरैया विकासखण्डों में साक्षरता प्रतिशत 78 से 80 के बीच में है। 80 प्रतिशत से अधिक साक्षरता प्रतिशत पुरूषों में भाग्यनगर व अजीतमल विकासखण्डों में पाई जाती है।

जनपद औरैया में जनगणना वर्ष 1901 में मात्र 2 नगर थे जिनमें 14998 व्यक्ति निवास करते थे। वर्ष 1911 में कस्बों की संख्या 2 ही रही परन्तु जनसंख्या घटकर 11992 व्यक्ति हो गई। सम्पूर्ण वृद्धि –20.04 प्रतिशत रही। जनगणना वर्ष 1921 में जनसंख्या बढ़कर 12074 हो गई तथा 1931 में 1.18 प्रतिशत वृद्धि के साथ नगरीय जनसंख्या 12216 व्यक्ति हो गई। जनगणना वर्ष 1941 में नगर केन्द्रों की संख्या बढ़कर 2 एवं जनसंख्या बढ़कर 15704 व्यक्ति हो गई। जनगणना वर्ष 1951 में नगरों की संख्या 2 तथा जनसंख्या बढ़कर 18705 हो गई तथा प्रतिशत वृद्धि 19.10 अंकित की गयी।

जनगणना वर्ष 1961 में नगरों की संख्या 2 ही रही और जनसंख्या भी घटकर 17463 रह गई। वर्ष 1971 में नगरों की संख्या तो 2 ही रही परन्तु जनसंख्या बढ़कर 25517 व्यक्ति हो गई। जनगणना 1981 में नगरों की संख्या पुनः 7 हो गई परन्तु जनसंख्या में तीव्र वृद्धि 261.70 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई। जनगणना 1991 में नगरों की संख्या यथावत् तथा जनसंख्या 129928 व्यक्ति पहुंच गई और 2001 की जनगणना में यह वृद्धि 168967 व्यक्ति हो गई।

सारणी क्रमांक 1

जनपद औरैया : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1901-2001

जनगणना दशक	औरैया	दिबियापुर	फफूंद	अटसू	अजीतमल	अछल्दा	विधूना	कुल योग	वृद्धि प्रतिशत
1901	7393	—	7605	—	—	—	—	14998	———
1911	5836	—	6156	—	—	—	—	11992	—20.04
1921	6470	—	5604	—	—	—	—	12074	+00.68
1931	7087	—	5129	—	—	—	—	12216	+01.18
1941	9840	—	5864	—	—	—	—	15704	+28.55
1951	13378	—	5327	—	—	—	—	18705	+19.10
1961	17463	—	000	—	—	—	—	17463	—06.60
1971	25517	—	000	—	—	—	—	25517	+46.12
1981	35815	8328	9599	7280	13423	5688	12163	92296	261.70
1991	50772	13687	12190	8528	18332	7144	19275	129928	404.81
2001	64740	20595	15340	10593	24549	8361	24789	168967	+00.30

प्रथम नगर औरैया की जनसंख्या 64740 की तुलना में द्वितीय कोटि के नगर विधूना की जनसंख्या 32370 होनी चाहिये परन्तु वह 7581 व्यक्ति कम है। इसी प्रकार तृतीय स्तर के नगर अजीतमल की जनसंख्या 21580 व्यक्ति होनी चाहिये जो 2969 व्यक्ति अधिक है। इसी प्रकार दिबियापुर 4410 व्यक्ति अधिक, फफूंद 2392 व्यक्ति अधिक हैं षष्ठम स्तर के नगर अटसू की जनसंख्या 10593 है जो नियमतः 10790 की तुलना में 197 व्यक्ति अधिक है कहा जा सकता है कि यही नगर सिद्धान्त पर लगभग सटीक बैठता है। सांतवे नगर अछल्दा की जनसंख्या 8361 व्यक्ति है और इसकी आदर्श जनसंख्या 9249 व्यक्ति होनी चाहिये जो आदर्श स्थिति से 888 व्यक्ति अधिक है।

जनपद औरैया के नगरीय क्षेत्रों में प्रायमरी स्तर से लेकर महाविद्यालय स्तर तक के मात्र 253 शिक्षण संस्थायें है। नगर स्तर पर सर्वाधिक शिक्षण संस्थायें औरैया नगर में 121 तथा सबसे कम 14 अटसू नगर में है। उल्लिखित शैक्षणिक सुविधाओं को प्रतिलाख जनसंख्या पर परिगणित किया जाये तो जनपद औरैया के नगरीय क्षेत्रों में प्रति लाख जनसंख्या पर149.73 शिक्षण संस्थायें है। सर्वाधिक शिक्षण संस्थायें अछल्दा टाउन एरिया में 394.69 संस्थायें प्रतिलाख व्यक्ति तथा सबसे कम विधूना नगर में 88.75 संस्थायें प्रतिलाख व्यक्तियों पर हैं प्रतिलाख जनसंख्या पर प्राथमिक विद्यालय 33.14 जूनियर हाईस्कल 86.41 इण्टर कालेज 26.04 तथा महाविद्यालय 4.14 हैं यहॉ उल्लेखनीय है कि फफूंद अटसू व अछल्दा नगर केन्द्रों पर कोई भी महाविद्यालय नहीं है। जपद के केवल औरैया, विधूना, अजीतमल व दिबियापुर में ही महाविद्यालय स्तर की शिक्षण सुविधायें है।

जनपद औरैया के सातों नगरों में स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण प्रतिलाख जनसंख्या पर मात्र 15.39 है। कहना अनुचित न होगा कि स्वास्थ्य

सुविधाओं से सम्बन्धित सभी छोटी–बड़ी इकाईयों को जोड़कर देखने पर स्थिति अति भयावह प्रतीत हो रही है। प्रतिलाख जनसंख्या पर मात्र 15.39 इकाईयॉ अर्थात् प्रतिइकाई पर लगभग 6498 व्यक्तियों की देखभाल का अभार है जो बिल्कुल व्यावहारिक नहीं कहा जा सकता है। नगर स्तर पर दृष्टिपात करें तो अपेक्षाकृत बेहतर सुविधा अछल्दा नगर (35.88), तथा सबसे दयनीय स्थिति औरैया नगर (6.18) की है। जो जनपद का मुख्यालय भी है।

औरैया जनपद के सभी विकासखण्ड में कुल बाजारों की संख्या 77 है। जिसमें सर्वाधिक सहार तथा औरैया में 16.88 एवं 16.88 प्रतिशत बाजार है। सबसे कम बाजार अजीतमत विकासखण्ड में 10.39 प्रतिशत है। बाजार सेवित ग्राम में कुल 841 है जिसमें सर्वाधिक बाजार सेवित ग्राम 19. 98 प्रतिशत औरैया विकासखण्ड में है तथा सबसे कम बाजार सेवित ग्राम 11.30 प्रतिशत सहार जनपद में है। अन्य जनपदों में 12 से 14 प्रतिशत तक सेवित ग्राम है। कुल सेवित ग्रामों का क्षेत्रफल 195699.75 हेक्टेयर है जिसमें सर्वाधिक 18.81 प्रतिशत क्षेत्रफल औरैया विकासखण्ड में है तथा सबसे कम 10.33 सेवित क्षेत्रफल अजीतमल विकासखण्ड में है। 16.15 प्रतिशत सेवित क्षेत्रफल विधूना विकासखण्ड में तथा 15.24 प्रतिशत सेवित क्षेत्रफल सहार विकासखण्ड में है।

केन्द्रीयता सूचकांकों के आधार पर नगर केन्द्रों के पदानुक्रमीय स्तर दिए गये हैं। जिसमें औरैया नगर जनपद मुख्यालय होने के कारण प्रथम स्तर का एक मात्र नगरकेन्द्र है। यहाँ कई उच्च स्तर की सेवाएं उपलब्ध हैं तथा यह एक विस्तृत क्षेत्र को सेवाएं प्रदान करता है। द्वितीय स्तर पर नगरकेन्द्र विधूना, अजीतमल व दिबियापुर आते हैं, जिसमें विधूना तहसील मुख्यालय है जबकि दिबियापुर मुख्य रेलमार्ग पर स्थित नगर पालिका स्तर का नगर है। यह दिल्ली–हाबड़ा ब्राडगेज का रेलवे स्टेशन

होने के कारण प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है। तृतीय स्तर पर 2 नगर केन्द्र आते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से फफूंद व अटसू है जो कि प्रमुख व्यापारिक मुख्यालय भी हैं।

सारणी क्रमांक 2
जनपद औरैया : केन्द्रीयता सूचकांको के आधार पर नगरकेन्द्रों के पदानुक्रमीय स्तर

नगरकेन्द्रों के स्तर	केन्द्रीयता सूचकांक	नगरकेन्द्रों की संख्या	नगरकेन्द्रों के नाम
प्रथम स्तर	80 से अधिक	1	औरैया
द्वितीय स्तर	50 से 80	3	विधूना, अजीतमल व दिबियापुर
तृतीय स्तर	20 से 50	2	फफूंद व अटसू
चतुर्थ स्तर	20 से कम	1	अछल्दा

इन नगर केन्द्रों पर मध्यम एवं छोटे स्तर की सभी आधारभूत सेवाएं उपलब्ध हैं तथा यह नगर केन्द्र अपेक्षाकृत सीमित क्षेत्र को सेवाएं प्रदान करते हैं। ये नगरकेन्द्र ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन नगर केन्द्रों पर सभी प्राथमिक सेवाएं उपलब्ध हैं। जो अपने निकटवर्ती छोटे क्षेत्र को सेवाएं प्रदान करते हैं। लघुनगर केन्द्र सीमित जनसंख्या एवं सीमित क्षेत्र को सेवाएं प्रदान करता है।

जनपद औरैया के सभी सातों नगरों को उल्लिखित सारणी में सेटिलमेंट इण्डेक्स के अनुसार दर्शाया गया है। स्पष्ट है कि सर्वाधिक मानवाला नगर (587.38) औरैया ही है। जो जनपद मुख्यालय है। इसी क्रम में सातवें स्थान का नगर अछल्दा है जिसका सेटिलमेंट इण्डेक्स मान सबसे कम (240. 95) है तथा यहॉ पर कार्यात्मक इकाईयों के आधार पर भी क्रम 7वां ही है।

सभी नगरों का सेटिलमेंट इण्डैक्स मान व कार्यात्मक इकाई मान सारणी क्रमांक 3 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 3
जनपद औरैया : नगरों का सैटिलमेंट इण्डेक्सीय पादानुक्रम

क्र0 सं0	नगर का नाम	सैटिलमेंट इण्डेक्स	सैटिलमेंट इण्डेक्स के अनुसार क्रम	कार्यात्मक इकाइयॉ	कार्यात्मक इकाइयों के अनुसार क्रम
1	औरैया	587.38	1	38	1
2	विधूना	436.12	2	31	2
3	अजीतमल	397.43	3	28	3
4	दिबियापुर	386.58	4	27	4
5	फफूंद	301.05	5	21	5
6	अटसू	274.59	6	19	6
7	अछल्दा	240.95	7	18	7

नगर केंद्रों के सापेक्ष महत्व तथा उनकी संस्थागत अवसंरचना ज्ञात करने के लिये स्केलोग्राम विधि बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण एवं सुविधाजनक है। स्केलोग्राम विधि के द्वारा जहॉ एक ओर अधिवास अथवा नगर केंद्रों का पदानुक्रम सतत् महत्व के रूप में ज्ञात किया जा सकता है वही दूसरी ओर अवसंरचना भी ज्ञात की जा सकती है। अध्ययन क्षेत्र के नगर केन्द्रों का संस्थागत स्केलोग्राम पर आधारित पदानुक्रम परिशिष्ट में प्रदर्शित किया गया है। स्केलोग्राम पर आधारित पादानुक्रम के लिये 30 कार्यो का चयन किया गया है। इस विधि से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में पादानुक्रम के दृष्टिकोण से औरैया का प्रथम स्थान है। द्वितीय स्थान पर विधूना है तथा अन्तिम स्थान पर अछल्दा है। कारण स्पष्ट है कि औरैया जिला मुख्यालय होने के

साथ–साथ अध्ययन क्षेत्र का सबसे बड़ा नगर भी है। जहां सभी प्रकार के प्रकार्य विद्यमान है। विधूना पुराना नगर केन्द्र है। अछल्दा का अन्तिम स्थान होने का कारण स्पष्ट है क्योंकि इस नगर केन्द्र की जनसंख्या कम है।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि जैसे 2 नगरों की जनसंख्या वृद्धि होती है वैसे ही प्रकार्यात्मक इकाइयों की संख्या में वृद्धि हो रही है। अतः यहॉ परिकल्पना नं0 2 का सत्यापन हो जाता है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ प्रकार्यात्मक इकाइयों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इस परिकल्पना को सहसम्बन्ध के सूत्र $r = 1\text{-}6\Sigma d^2 / n^3\text{-}n$ से भी सत्यापित कर लिया है। जिसमें सहसम्बन्ध $r = +.8$ आ रहा है। इसका अर्थ होता है इन दोनों तथ्यों में धनात्मक पारस्परिक सम्बन्ध है। अतः परिकल्पना एकदम सत्य है इसी के साथ परिकल्पना नं0 3 का भी सत्यापन हो जाता है कि नगरीय केन्द्रों में प्रकार्य बढने से प्रकार्यात्मक इकाइयों की संख्या में वृद्धि होती है। इसको भी सहसम्बन्ध के सूत्र में परिकलित कर रिजल्ट प्राप्त कर लिया है इसमें $r = +7.5$ आता है। इससे स्पष्ट है कि दोनों में सहसम्बन्ध धनात्मक है अतः यह परिकल्पना भी सत्य की कसौटी पर खरी उतरती है।

औरैया नगर एवं जनपद के अन्य नगरों के जीवन को सुविधापूर्ण एवं आसान बनाने के लिये विभिन्न कार्य समन्वित रूप से आवश्यक है। नगर नीति निर्धारकों ने जिन क्रियाकलापों पर विशेष ध्यान दिया हैं वे निम्नलिखित हैं, यही तत्व अन्य नगरीय केन्द्रों पर भी लागू होते हैं –

– सार्वजनिक स्कूलों, स्थलों एवं भवनों पर प्रकाश की व्यवस्था।
– सार्वजनिक सड़कों, स्थलों एवं नालियों की सफाई।
– जल निकास, मलमूत्र, कूड़ा कचरा तथा अन्य गन्दगियों का निस्तारण।
– सुरक्षा अग्निशमन, तथा जान माल की रक्षा का प्रबन्ध।
– खतरनाक व्यापारों पर नियन्त्रण तस्करी, चोर बाजारी, मिलावट, कृत्रिम

अभाव पर नियंत्रण।

- सड़क, पुलिया, बाजार, नालियों, कुओं तथा बांधों का निर्माण।
- जलदाय व्यवस्था, सामुदायिक नलों की व्यवस्था।
- अकाल तथा अभाव के समय राहत व्यवस्था।
- जन साधारण हेतु पार्क, बगीचा, पुस्तकालय, अलायबघर, संग्रहालय, वाचनालय, बंदी सुधार गृहों आदि का प्रबन्ध।
- कर्मचारियों हेतु भवन निर्माण के लिये ऋण सुविधा।
- मलमूत्र फार्म की व्यवस्था।
- जनगणना करवाना।
- जनसाधारण के लिये संगीत नाटकों आदि की व्यवस्था।
- जन स्वास्थ्य विकास के उपाय।
- मातृ–शिशु कल्याण कार्य।
- मानव कल्याण कार्यो हेतु अनुदान (दलितों, विकलांगों, असहायों की सहायता)
- मेलों व प्रदर्शनियों की व्यवस्था।
- रोगी वाहन (अम्बूलेन्स) की व्यवस्था।
- सड़कों के किनारे वृक्षारोपण।
- बाल पुस्तकालय एवं वाचनालयों की व्यवस्था।
- आय वाले व्यक्तियों व बेरोजगारों को उचित एवं सस्ते किराये पर दुकानों का आबंटन।
- पिछड़ी बस्तियों में स्कूल मरम्मत, निर्माण प्रकाश, सफाई व्यवस्था।
- कृषि शिक्षा केन्द्र की स्थापना आदि।